قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ

उन्हों (खिज़र) ने कहा क्या मैं ने आप से कहा नहीं था के आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़ सब्र नहीं

صَبۡرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ اِنۡ سَاَلۡتُكَ عَنۡ شَىۡءٍ بَعۡدَهَا

कर सकोगे। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अगर मैं आप से किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ इस के बाद सवाल करूँ

فَلَا تُصٰحِبۡنِىۡ ۚ قَدۡ بَلَغۡتَ مِنۡ لَّدُنِّىۡ عُذۡرًا ﴿٧٦﴾ فَانۡطَلَقَا ۟ وقفة

तो आप मुझे अपने साथ न रखिए। बेशक आप मेरी तरफ से उज़्र की इन्तिहा को पहोंच गए हो। फिर वो दोनों

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهۡلَ قَرۡيَةِ ِۨاسۡتَطۡعَمَآ اَهۡلَهَا فَاَبَوۡا

चले। यहां तक के जब वो दोनों एक गाँव वालों के पास पहोंचे तो दोनों ने बस्ती वालों से खाना मांगा, तो

اَنۡ يُّضَيِّفُوۡهُمَا فَوَجَدَا فِيۡهَا جِدَارًا يُّرِيۡدُ

बस्ती वालों ने उन दोनों की ज़ियाफ़त करने से इन्कार कर दिया। फिर दोनों ने उस बस्ती में दीवार को पाया जो गिरना

اَنۡ يَّنۡقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوۡ شِئۡتَ لَتَّخَذۡتَ عَلَيۡهِ

चाह रही थी, तो उन्हों (खिज़र) ने उसे सीधा कर दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अगर तुम चाहते तो इस पर उजरत

اَجۡرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيۡنِىۡ وَ بَيۡنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ

ले लेते। उन्हों (खिज़र) ने कहा के ये मेरे और आप के दरमियान जुदाई (का वक़्त) है। मैं आप को अभी बतलाता

بِتَاۡوِيۡلِ مَا لَمۡ تَسۡتَطِعۡ عَّلَيۡهِ صَبۡرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيۡنَةُ

हूँ हक़ीक़त उन बातों की जिन पर सब्र की आप ताक़त न रख सके। अल्बत्ता कश्ती,

فَكَانَتۡ لِمَسٰكِيۡنَ يَعۡمَلُوۡنَ فِى الۡبَحۡرِ فَاَرَدۡتُّ

तो वो चन्द मिस्कीनों की थी जो समन्दर में काम करते थे, तो मैं ने चाहा के मैं उसे

اَنۡ اَعِيۡبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمۡ مَّلِكٌ يَّاۡخُذُ كُلَّ سَفِيۡنَةٍ

ऐबदार कर दूँ, और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कश्ती को ज़बर्दस्ती कर के ले लेता

غَصۡبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الۡغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤۡمِنَيۡنِ

था। और अल्बत्ता लड़का, तो उस के वालिदैन मोमिन थे

فَخَشِيۡنَاۤ اَنۡ يُّرۡهِقَهُمَا طُغۡيَانًا وَّكُفۡرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدۡنَاۤ

तो हम डरे इस से के वो उन दोनों को भी सरकशी और कुफ्र के क़रीब कर दे। तो हम ने इरादा किया के

اَنۡ يُّبۡدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيۡرًا مِّنۡهُ زَكٰوةً وَّاَقۡرَبَ رُحۡمًا ﴿٨١﴾

उन का रब उन्हें बदले में (ऐसी औलाद) दे जो पाकीज़गी में उस से बेहतर और सिलारहमी में उस से बढ़ कर हो।

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ

और अल्बत्ता दीवार, तो वो दो यतीम लड़कों की थी उस शेहर में और

تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ

उस दीवार के नीचे उन का खज़ाना था और उन के बाप नेक थे। तो तेरे रब ने चाहा

اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً

के वो दोनों अपनी जवानी को पहोंचें और अपना खज़ाना खुद निकालें। ये आप के

مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ۭ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ

रब की रहमत की वजह से हुवा। और मैं ने उस को अपनी तरफ से नहीं किया। ये उस चीज़ का मतलब है जिस

مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝٨٢ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۭ ع

पर आप सब्र की ताक़त न रख सके। और ये आप से ज़ुलक़रनैन के मुतअल्लिक़ सवाल करते हैं। आप फरमा

قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۝٨٣ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ

दीजिए के अनक़रीब मैं तुम्हारे सामने उस का कुछ तज़किरा करूंगा। यक़ीनन हम ने उसे ज़मीन में हुकूमत

فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ۝٨٤ فَاَتْبَعَ

दी थी और हम ने उसे हर चीज़ के असबाब दिए थे। फिर वो असबाब

سَبَبًا ۝٨٥ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ

ले कर चले। यहां तक के जब सूरज के डूबने की जगह तक पहोंचे तो उसे पाया के वो डूब रहा है

فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۭ قُلْنَا يٰذَا

कीचड़ वाले चशमे में और उस के पास एक क़ौम को पाया। हम ने कहा के ऐ

الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ

ज़ुलक़रनैन! या तो आप अज़ाब दें या उन में भलाई

حُسْنًا ۝٨٦ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ

करें। ज़ुलक़रनैन ने कहा अल्बत्ता जो ज़ुल्म करेगा, तो हम उसे अज़ाब देंगे, फिर उसे लौटाया जाएगा

اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨٧ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ

अपने रब की तरफ, फिर वो भी उसे बदतरीन अज़ाब देगा। और अल्बत्ता जो ईमान लाएगा

وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨ الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ

और आमाले सालिहा करेगा तो उस के लिए अच्छा बदला होगा। और हम उस से अपने मुआमले में

اَمۡرِنَا يُسۡرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتۡبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطۡلِعَ

आसानी वाली बात कहेंगे। फिर वो सामान ले कर चले। यहां तक के जब वो सूरज के तुलूअ होने की

الشَّمۡسِ وَجَدَهَا تَطۡلُعُ عَلٰى قَوۡمٍ لَّمۡ نَجۡعَلۡ لَّهُمۡ

जगह पर पहोंचे, तो उसे पाया के वो तुलूअ हो रहा है एक क़ौम पर जिन के लिए हम ने सूरज से आड़

مِّنۡ دُوۡنِهَا سِتۡرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدۡ اَحَطۡنَا بِمَا لَدَيۡهِ خُبۡرًا ﴿٩١﴾

नहीं बनाई। इसी तरह, और हम ने उस का भी इहाता कर रखा है इल्म के ऐतेबार से जो उन के पास था। फिर

ثُمَّ اَتۡبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيۡنَ السَّدَّيۡنِ وَجَدَ

वो असबाब ले कर चले। यहां तक के जब वो दो बन्द तक पहोंच गए तो उन्हों ने दोनों बन्द के पीछे एक

مِنۡ دُوۡنِهِمَا قَوۡمًا ۙ لَّا يَكَادُوۡنَ يَفۡقَهُوۡنَ قَوۡلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوۡا يٰذَا

क़ौम को पाया, जो बात समझने के भी क़रीब नहीं थी। उन्हों ने कहा के ऐ

الۡقَرۡنَيۡنِ اِنَّ يَاۡجُوۡجَ وَمَاۡجُوۡجَ مُفۡسِدُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ

ज़ुलक़रनैन! यक़ीनन याजूज माजूज ज़मीन में फसाद फेला रहे हैं,

فَهَلۡ نَجۡعَلُ لَكَ خَرۡجًا عَلٰٓى اَنۡ تَجۡعَلَ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَهُمۡ

तो क्या हम आप के लिए कोई खर्च मुतअय्यन कर दें इस शर्त पर के आप हमारे और उन के दरमियान बन्द

سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىۡ فِيۡهِ رَبِّىۡ خَيۡرٌ فَاَعِيۡنُوۡنِىۡ

बना दें? ज़ुलक़रनैन ने कहा के जिस की मेरे रब ने मुझे क़ुदरत दी है, वो बेहतर है, इस लिए तुम मेरी इआनत

بِقُوَّةٍ اَجۡعَلۡ بَيۡنَكُمۡ وَبَيۡنَهُمۡ رَدۡمًا ﴿٩٥﴾ اٰتُوۡنِىۡ زُبَرَ الۡحَدِيۡدِ ؕ

करो क़ूव्वत से, तो मैं तुम्हारे और उन के दरमियान में एक मज़बूत दीवार बना दूंगा। तुम मेरे पास लोहे की तख़तियाँ

حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيۡنَ الصَّدَفَيۡنِ قَالَ انۡفُخُوۡا ؕ

लाओ। यहां तक के जब उन्हों ने दोनों किनारों को बराबर कर दिया, तो कहा के आग फूंको। यहां तक के जब

حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوۡنِىۡۤ اُفۡرِغۡ عَلَيۡهِ قِطۡرًا ﴿٩٦﴾ ؕ

उस को सरापा आग बना दिया, तो ज़ुलक़रनैन ने कहा के तुम मेरे पास पिघला हुवा तांबा लाओ के मैं उस पर बहा दूँ।

فَمَا اسۡطَاعُوۡۤا اَنۡ يَّظۡهَرُوۡهُ وَمَا اسۡتَطَاعُوۡا لَهٗ نَقۡبًا ﴿٩٧﴾

फिर वो उस पर चढ़ने की ताक़त नहीं रख सकेंगे और न उस में सूराख करने की ताक़त रख सकेंगे।

قَالَ هٰذَا رَحۡمَةٌ مِّنۡ رَّبِّىۡ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ رَبِّىۡ جَعَلَهٗ

ज़ुलक़रनैन ने कहा ये मेरे रब की रहमत है। फिर जब मेरे रब का वादा आ जाएगा तो वो उसे

دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿۹۸﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ

रेज़ा रेज़ा कर देगा। और मेरे रब का वादा सच्चा है। और हम छोड़ देंगे उन को उस दिन

يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّ نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ

इस हाल में के बाज़ बाज़ से गुड़मुड़ होंगे और सूर में फूंक मारी जाएगी, फिर हम उन सब को इकट्ठा

جَمْعًا ﴿۹۹﴾ وَّ عَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ﴿۱۰۰﴾

करेंगे। और हम जहन्नम को उस दिन काफिरों के सामने पेश करेंगे।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا

जिन की आँखें मेरे ज़िक्र (कुरआन) से (ग़फलत के) परदे में थीं और जो

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿۱۰۱﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ۱۱ ع ۱۶ ۲

सुनने की ताक़त नहीं रखते थे। क्या फिर काफिरों ने ये समझ रखा है के

اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ؕ اِنَّآ اَعْتَدْنَا

वो मुझे छोड़ कर मेरे बन्दों को हिमायती बना लेंगे? यक़ीनन हम ने काफिरों की ज़ियाफत

جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ

के लिए जहन्नम तय्यार कर रखी है। आप फरमा दीजिए क्या हम तुम्हें बतलाएं उन लोगों के बारे में

اَعْمَالًا ﴿۱۰۳﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ

जो आमाल के ऐतेबार से सब से ज़्यादा खसारे वाले हैं? वो लोग हैं के जिन की कोशिशें दुन्यवी ज़िन्दगी में बेकार

يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

हो गईं और वो ये समझते रहे के वो अच्छे काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की

كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَ لِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ

आयात के साथ कुफ्र किया और उस की मुलाक़ात का (इन्कार किया), फिर उन के आमाल अकारत हो गए

فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿۱۰۵﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ

फिर हम उन के लिए क़यामत के दिन वज़न क़ाइम नहीं करेंगे। ये उन की सज़ा जहन्नम है

جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿۱۰۶﴾

उन के कुफ्र की वजह से और मेरी आयतों और मेरे पैग़म्बरों को मज़ाक़ बनाने की वजह से।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ

यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे उन की ज़ियाफत के लिए जन्नातुल

الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا

फ़िरदौस होंगी। जिन में वो हमेशा रहेंगे, जिस से वो हटना नहीं

حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ

चाहेंगे। आप फरमा दीजिए के अगर समन्दर रोशनाई बन जाए मेरे रब के कलिमात के लिए, तो समन्दर खत्म

الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ

हो जाएगा इस से पेहले के मेरे रब के कलिमात खत्म हों, अगर्चे हम उसी जैसी मदद के तौर पर और भी ले

مَدَدًا ﴿١٠٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ

आएं। आप फरमा दीजिए के मैं तो सिर्फ तुम जैसा एक इन्सान हूँ, मेरी तरफ़ वही की जा रही है

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ

ये के तुम्हारा माबूद यकता माबूद है। फिर जो अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता है, तो उसे

١٢ ع ٩ ٣ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

चाहिए के वो आमाले सालिहा करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठेहराए।

اٰيَاتُهَا ٩٨ (١٩) سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ (٤٤) رُكُوْعَاتُهَا ٦

उस में ९८ आयतें हैं सूरह मरयम मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾

काफ हा या ऐन साद। ये तेरे रब की उस के बन्दे ज़करीया (अलैहिस्सलाम) पर रहमत का तज़किरा है।

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ

जब उन्हों ने अपने रब को चुपके चुपके पुकारा। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! यक़ीनन मेरी

الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ

हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं और सर में बुढ़ापा फैल चुका है और मैं तुझ से मांगने

بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ

में ऐ मेरे रब! नाकाम नहीं रहा। और यक़ीनन मैं अपने पीछे वारिसों से डरता

مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ

हूँ और मेरी बीवी बांझ है, तो तू अपनी तरफ़ से मेरे लिए वारिस अता

وَلِيًّا ۝٥ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ

फरमा। जो मेरा वारिस बने और आले याकूब का वारिस बने। और उसे ऐ मेरे रब! तू

رَضِيًّا ۝٦ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ

पसन्दीदा बना। ऐ ज़करीया! यक़ीनन हम आप को एक लड़के की बशारत दे रहे हैं जिस का नाम यहया होगा,

لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ

जिस का इस से पेहले हम ने कोई हमनाम नहीं बनाया। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे

لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ

लिए लड़का कहाँ से होगा हालांके मेरी बीवी बांझ है और मैं बुढ़ापे की इन्तिहा को

مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ

पहोंच चुका हूँ? अल्लाह ने फरमाया के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है के वो मुझ पर

هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝٩ قَالَ

आसान है और मैं ने तुझे इस से पेहले पैदा किया हालांके तू कुछ भी नहीं था। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा

رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

ऐ मेरे रब! मेरे लिए निशानी मुक़र्रर कर दीजिए। अल्लाह ने फरमाया के तेरी निशानी ये है के तुम इन्सानों से

ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ

बात नहीं करोगे तंदुरूस्त होने के बावजूद तीन रात तक। फिर वो अपनी क़ौम के सामने मेहराब से निकले

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝١١ يٰيَحْيٰى خُذِ

तो ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने उन को भी इशारे से कहा के तुम अल्लाह की सुबह व शाम तसबीह करो। ऐ यहया! किताब

الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٢ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا

को मज़बूती से पकड़ लो। और हम ने उन्हें बचपन ही में दानाई अता कर दी थी। और हमारी तरफ़ से शफ़क़त

وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۝١٣ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا

और पाकीज़गी अता की। और वो मुत्तक़ी थे। और अपने वालिदैन के फरमांबरदार थे और ज़बर्दस्ती करने वाले

عَصِيًّا ۝١٤ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ

नाफरमान नहीं थे। और उन पर सलामती हो जिस दिन वो पैदा हुए और जिस दिन वो मरेंगे और जिस दिन

يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٥ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ ع وقف لازم

वो ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। और इस किताब में मरयम का तज़किरा कीजिए। जब वो अपने

مِنۡ اَهۡلِهَا مَكَانًا شَرۡقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتۡ مِنۡ دُوۡنِهِمۡ

घर वालों से अलग हो कर मशरिक़ी किनारे में चली गई। और उन से

حِجَابًا ۖ فَاَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهَا رُوۡحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا

परदा कर लिया, फिर हम ने उन की तरफ हमारी रूह को भेजा जो उन के सामने पूरा इन्सान बन कर मुतमस्सिल

سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتۡ اِنِّىۡۤ اَعُوۡذُ بِالرَّحۡمٰنِ مِنۡكَ اِنۡ كُنۡتَ

हुवा। मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा के यक़ीनन मैं तुझ से रहमान की पनाह मांगती हूँ अगर तू अल्लाह से

تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوۡلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا

डरता है। तो रूह ने कहा मैं तो सिर्फ तेरे रब का भेजा हुवा फरिशता हूँ। ताके मैं तुझे पाकीज़ा लड़का

زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتۡ اَنّٰى يَكُوۡنُ لِىۡ غُلٰمٌ وَّلَمۡ يَمۡسَسۡنِىۡ بَشَرٌ

दूँ। मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा के मुझे लड़का कहाँ से होगा हालांके मुझे किसी इन्सान ने छूवा नहीं है

وَّلَمۡ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ

और मैं ज़िनाकार नहीं हूँ? फरिशते ने कहा के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है के ये मुझ पर आसान है।

وَلِنَجۡعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحۡمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمۡرًا

और इस लिए होगा ताके हम उसे इन्सानों के लिए निशानी बनाएं और हमारी तरफ से रहमत बनाएं। और इस मुआमले

مَّقۡضِيًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتۡهُ فَانۡتَبَذَتۡ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

का फ़ैसला कर दिया गया है। फिर मरयम (अलैहस्सलाम) लड़के से हामिला हो गई, फिर उस को ले कर दूर जगह में अलग चली गई।

فَاَجَآءَهَا الۡمَخَاضُ اِلٰى جِذۡعِ النَّخۡلَةِ ۚ قَالَتۡ يٰلَيۡتَنِىۡ

फिर उन को दर्दे ज़ेह आया खजूर के तने के पास। मरयम (अलैहस्सलाम) केहने लगी ऐ काश के

مِتُّ قَبۡلَ هٰذَا وَكُنۡتُ نَسۡيًا مَّنۡسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا

मैं इस से पेहले मर जाती और मैं भुला कर फरामोश कर दी जाती। फिर मरयम (अलैहस्सलाम) को उन के नीचे से

مِنۡ تَحۡتِهَاۤ اَلَّا تَحۡزَنِىۡ قَدۡ جَعَلَ رَبُّكِ تَحۡتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

आवाज़ दी के तू ग़म न कर, यक़ीनन तेरे रब ने तेरे नीचे नेहेर जारी कर दी है।

وَهُزِّىۡۤ اِلَيۡكِ بِجِذۡعِ النَّخۡلَةِ تُسٰقِطۡ عَلَيۡكِ رُطَبًا

और तू अपनी तरफ इस खजूर के तने को हिला, खुद टूट कर तुझ पर ताज़ा खजूरें

جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِىۡ وَاشۡرَبِىۡ وَقَرِّىۡ عَيۡنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

गिरेंगी। फिर तू खा और पी और आँखें ठन्डी रख। फिर अगर तू इन्सानों में

الۡبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوۡلِىۡۤ اِنِّىۡ نَذَرۡتُ لِلرَّحۡمٰنِ صَوۡمًا

से किसी को देखे, तो यूँ केहना के मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़र मानी है,

فَلَنۡ اُكَلِّمَ الۡيَوۡمَ اِنۡسِيًّا ۚ﴿۲۶﴾ فَاَتَتۡ بِهٖ قَوۡمَهَا تَحۡمِلُهٗ ؕ قَالُوۡا

के मैं आज किसी इन्सान से हरगिज़ गुफ्तगू नहीं करूंगी। फिर वो उस लड़के को उठा कर अपनी क़ौम के पास आई। वो

يٰمَرۡيَمُ لَقَدۡ جِئۡتِ شَيۡـًٔا فَرِيًّا ﴿۲۷﴾ يٰۤاُخۡتَ هٰرُوۡنَ مَا كَانَ

केहने लगे ऐ मरयम! यक़ीनन तू ने बहोत गन्दी हरकत की है। ऐ हारून की बेहेन! तेरा बाप भी बुरा

اَبُوۡكِ امۡرَاَ سَوۡءٍ وَّمَا كَانَتۡ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿۲۸﴾ فَاَشَارَتۡ

इन्सान नहीं था और न तेरी माँ ज़िनाकार थी। तो मरयम (अलैहस्सलाम) ने उस लड़के की तरफ

اِلَيۡهِ ؕ قَالُوۡا كَيۡفَ نُكَلِّمُ مَنۡ كَانَ فِى الۡمَهۡدِ صَبِيًّا ﴿۲۹﴾ قَالَ

इशारा किया। वो केहने लगे हम कैसे कलाम करें उस से जो गेहवारे में बच्चा है? तो बच्चा बोला

اِنِّىۡ عَبۡدُ اللّٰهِ ۖ اٰتٰنِىَ الۡكِتٰبَ وَجَعَلَنِىۡ نَبِيًّا ۙ﴿۳۰﴾ وَّجَعَلَنِىۡ

यक़ीनन मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उस ने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है। और मुझे मुबारक

مُبٰرَكًا اَيۡنَ مَا كُنۡتُ ۖ وَاَوۡصٰنِىۡ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ

बनाया है जहाँ मैं रहूँ। और उस ने मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और ज़कात का जब तक

مَا دُمۡتُ حَيًّا ۖ﴿۳۱﴾ وَّبَرًّا بِوَالِدَتِىۡ ۫ وَلَمۡ يَجۡعَلۡنِىۡ جَبَّارًا

मैं ज़िन्दा रहूं। और मुझे अपनी वालिदा का फरमांबरदार बनाया है। और मुझे सरकश, बदबख्त नहीं

شَقِيًّا ﴿۳۲﴾ وَالسَّلٰمُ عَلَىَّ يَوۡمَ وُلِدۡتُّ وَيَوۡمَ اَمُوۡتُ

बनाया। और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुवा और जिस दिन मैं मरूंगा

وَيَوۡمَ اُبۡعَثُ حَيًّا ﴿۳۳﴾ ذٰلِكَ عِيۡسَى ابۡنُ مَرۡيَمَ ۚ قَوۡلَ الۡحَقِّ

और जिस दिन मैं ज़िन्दा कर के उठाया जाऊँगा। ये ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) हैं। ये सच्ची बात है

الَّذِىۡ فِيۡهِ يَمۡتَرُوۡنَ ﴿۳۴﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنۡ يَّتَّخِذَ

जिस में ये झगड़ा कर रहे हैं। अल्लाह के लिए मुनासिब नहीं के वो औलाद

مِنۡ وَّلَدٍ ۙ سُبۡحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمۡرًا فَاِنَّمَا يَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ

बनाए, अल्लाह तो औलाद से पाक है। जब वो किसी मुआमले का फैसला करता है तो उस से केहता है के हो जा,

فَيَكُوۡنُ ﴿۳۵﴾ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا

तो वो हो जाता है। और यक़ीनन मेरा रब और तुम्हारा रब अल्लाह है, तो तुम उसी की इबादत करो। ये

صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخۡتَلَفَ الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ ۚ

सीधा रास्ता है। फिर गिरोह आपस में अलग अलग हो गए।

فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ مَّشۡهَدِ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۳۷﴾ اَسۡمِعۡ

फिर काफिरों के लिए एक भारी दिन की हाज़िरी से हलाकत है। वो कितना अच्छी तरह सुनने वाले

بِهِمۡ وَاَبۡصِرۡ ۙ يَوۡمَ يَاۡتُوۡنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوۡنَ الۡيَوۡمَ

और कितना अच्छी तरह देखने वाले होंगे, जिस दिन वो हमारे पास आएंगे। लेकिन ज़ालिम लोग आज

فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۳۸﴾ وَاَنۡذِرۡهُمۡ يَوۡمَ الۡحَسۡرَةِ اِذۡ قُضِىَ

खुली गुमराही में हैं। और आप उन्हें डराइए हसरत वाले दिन से जब मुआमले का फ़ैसला कर दिया

الۡاَمۡرُ ۘ وَهُمۡ فِىۡ غَفۡلَةٍ وَّهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّا نَحۡنُ وقف لازم

जाएगा, अभी वो ग़फ़लत में हैं और ईमान नहीं लाते। यक़ीनन हम ही इस ज़मीन

نَرِثُ الۡاَرۡضَ وَمَنۡ عَلَيۡهَا وَاِلَيۡنَا يُرۡجَعُوۡنَ ﴿۴۰﴾ ع ۲ ۲۵ ۵ وَاذۡكُرۡ

के वारिस होंगे और उन के भी जो ज़मीन पर हैं और हमारी तरफ़ वो सब लौटाए जाएंगे। और आप

فِى الۡكِتٰبِ اِبۡرٰهِيۡمَ ۘ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيۡقًا نَّبِيًّا ﴿۴۱﴾

किताब में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए। यक़ीनन वो सिद्दीक़ थे, नबी थे।

اِذۡ قَالَ لِاَبِيۡهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعۡبُدُ مَا لَا يَسۡمَعُ وَلَا يُبۡصِرُ

जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा से कहा के ऐ मेरे अब्बा! तुम क्यूं इबादत करते हो ऐसी चीज़ों की जो न सुनती

وَلَا يُغۡنِىۡ عَنۡكَ شَيۡـًٔا ﴿۴۲﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّىۡ قَدۡ جَآءَنِىۡ

हैं और न देखती हैं और आप के कुछ भी काम नहीं आतीं। ऐ मेरे अब्बा! यक़ीनन मेरे पास वो इल्म

مِنَ الۡعِلۡمِ مَا لَمۡ يَاۡتِكَ فَاتَّبِعۡنِىۡۤ اَهۡدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿۴۳﴾

आया है जो आप के पास नहीं आया इस लिए आप मेरे पीछे चलिए, मैं आप को सीधे रास्ते की रहनुमाई करूंगा।

يٰۤاَبَتِ لَا تَعۡبُدِ الشَّيۡطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيۡطٰنَ كَانَ لِلرَّحۡمٰنِ

ऐ मेरे अब्बा! आप शैतान की इबादत मत कीजिए। यक़ीनन शैतान रहमान का

عَصِيًّا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّىۡۤ اَخَافُ اَنۡ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ

नाफरमान है। ऐ मेरे अब्बा! यक़ीनन मैं डरता हूँ इस से के आप को रहमान की तरफ़ से अज़ाब

الرَّحۡمٰنِ فَتَكُوۡنَ لِلشَّيۡطٰنِ وَلِيًّا ﴿۴۵﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنۡتَ

पहोंचे, फिर तुम शैतान के दोस्त बन जाओ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बाप ने कहा क्या तुम ऐराज़

عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ

करते हो मेरे माबूदों से, ऐ इब्राहीम? अगर तुम बाज़ नहीं आओगे तो मैं तुम्हें रज्म कर दूँगा और तू दूर हो जा

وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٦﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۭ

मुझ से मुद्दते दराज़ तक। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अस्सलामु अलैकुम! अनक़रीब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से

اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ

इस्तिग़फार करूँगा। यक़ीनन वो मुझ पर महरबान है। और मैं छोड़ रहा हूँ तुम्हें और उन को जिन की तुम

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ڮ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَاۗءِ

अल्लाह के अलावा इबादत करते हो और मैं अपने रब को पुकारता हूँ। उम्मीद है के मैं मेरे रब से दुआ

رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

करने में नामुराद नहीं रहूंगा। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अलग हो गए उन से और उन से भी जिन की वो अल्लाह

اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

के अलावा इबादत करते थे, तो हम ने उन्हें इसहाक़ और याकूब (अलैहिमस्सलाम) दिए। और तमाम को हम ने नबी बनाया।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ

और हम ने उन्हें हमारी रहमत में से हिस्सा दिया और हम ने उन के उलूव्वे मन्ज़िलत, सच्चाई को बयान करने वाली ज़बानें

عَلِيًّا ﴿٥٠﴾ ۧ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۡ اِنَّهٗ كَانَ ركوع ٣

(तमाम अदयान में) बना दीं। और इस किताब में मूसा (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए। यक़ीनन वो

مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ

खालिस किए हुए और रसूल थे, नबी थे। और हम ने उन्हें पुकारा कोहे तूर की दाईं

الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ

जानिब से और हम ने उन्हें सरगोशी के लिए क़रीब किया। और हम ने उन्हें अपनी रहमत से उन के भाई

اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۡ

हारून को नबी बना कर अता किया। और इस किताब में इस्माईल (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए।

اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ ۚ وَكَانَ

यक़ीनन वो सच्चे वादे वाले थे और रसूल थे, नबी थे। और वो

يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۠ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ

अपने घर वालों को नमाज़ का और ज़कात का हुक्म देते थे। और वो अपने रब के नज़दीक

مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا

पसन्दीदा थे। और इस किताब में इदरीस (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए। यक़ीनन वो सिद्दीक़ थे,

نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

नबी थे। और हम ने उन्हें बुलन्द जगह पर उठा लिया। यही लोग हैं जिन पर

اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۫

अल्लाह ने इन्आम फरमाया अम्बिया में से, आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से।

وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ

और उन में से जिन को हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) के साथ सवार कराया। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى

और याकूब (अलैहिस्सलाम) की ज़ुर्रीयत में से। और उन में से जिन को हम ने हिदायत दी और जिन को हम ने मुन्तखब किया। जब

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِيًّا ﴿٥٨﴾ السجدة فَخَلَفَ

उन पर रहमान की आयतें तिलावत की जाती हैं तो वो सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते हैं। फिर

السجدة ٥

مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا

उन के बाद ऐसे नाख़लफ आए जिन्हों ने नमाज़ ज़ायेअ की और ख्वाहिशात के

الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ

पीछे पड़े, फिर वो अनक़रीब खराबी पाएंगे। मगर जो तौबा करे और ईमान लाए

وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ

और नेक काम करता रहे तो ये जन्नत में दाखिल होंगे और उन पर ज़रा भी

شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ

ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। जन्नाते अद्न में दाख़िल होंगे, जिन का रहमान ने वादा किया है अपने बन्दों से बग़ैर देखे।

اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا

यक़ीनन उस का वादा पूरा हो कर रहेगा। उस में वो सिवाए सलाम के कोई लग़्व बात

اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّ عَشِيًّا ﴿٦٢﴾ تِلْكَ

नहीं सुनेंगे। और उन को उस में खाना सुबह व शाम मिलेगा। ये

الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

वो जन्नत है जिन का हम वारिस बनाएंगे अपने बन्दों में से उन्हें जो मुत्तक़ी हैं।

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمۡرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡنَا

और हम नहीं उतरते मगर तेरे रब के हुक्म से। उसी की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो हमारे आगे हैं

وَمَا خَلۡفَنَا وَمَا بَيۡنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝٦٤ رَّبُّ

और जो हमारे पीछे हैं और जो उन के दरमियान में हैं। और तेरा रब भूलने वाला नहीं है। वो आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا فَاعۡبُدۡهُ وَاصۡطَبِرۡ

और ज़मीन का रब है और उन चीज़ों का रब है जो उन के दरमियान में हैं, तो आप उसी की इबादत कीजिए और

لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلۡ تَعۡلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ۝٦٥ ع وَيَقُوۡلُ الۡاِنۡسَانُ

उस की इबादत पर जमे रहिए। क्या आप उस का कोई हमनाम जानते हैं? और इन्सान केहता है के

ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوۡفَ اُخۡرَجُ حَيًّا ۝٦٦ اَوَلَا يَذۡكُرُ الۡاِنۡسَانُ

क्या जब मैं मर जाऊँगा तब मैं ज़िन्दा कर के निकाला जाऊँगा? क्या इन्सान याद नहीं रखता के

اَنَّا خَلَقۡنٰهُ مِنۡ قَبۡلُ وَلَمۡ يَكُ شَيۡـًٔا ۝٦٧ فَوَرَبِّكَ

हम ने उसे इस से पेहले पैदा किया हालांके वो कुछ भी नहीं था? फिर तेरे रब की क़सम! ज़रूर हम उन्हें

لَنَحۡشُرَنَّهُمۡ وَالشَّيٰطِيۡنَ ثُمَّ لَنُحۡضِرَنَّهُمۡ حَوۡلَ جَهَنَّمَ

और शयातीन को इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन्हें जहन्नम के इर्द गिर्द घुटने के बल बैठा हुवा होने की हालत में

جِثِيًّا ۝٦٨ ثُمَّ لَنَنۡزِعَنَّ مِنۡ كُلِّ شِيۡعَةٍ اَيُّهُمۡ اَشَدُّ

हाज़िर करेंगे। फिर हम निकालेंगे हर जमाअत में से उसे जो उन में से रहमान पर ज़्यादा

عَلَى الرَّحۡمٰنِ عِتِيًّا ۝٦٩ ثُمَّ لَنَحۡنُ اَعۡلَمُ بِالَّذِيۡنَ هُمۡ اَوۡلٰى بِهَا

सख्त सरकश था। फिर हम खूब जानते हैं उन्हें जो जहन्नम में दाखिल होने के

صِلِيًّا ۝٧٠ وَاِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتۡمًا

लाइक़ हैं। और तुम में से हर एक ज़रूर जहन्नम पर वारिद होने वाला है। ये तेरे रब पर लाज़िम है,

مَّقۡضِيًّا ۝٧١ ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيۡنَ

इस का फ़ैसला कर दिया गया है। फिर हम मुत्तक़ियों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में

فِيۡهَا جِثِيًّا ۝٧٢ وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ

घुटनों के बल पड़ा हुवा छोड़ देंगे। और जब उन पर हमारी आयतें तिलावत की जाती हैं साफ साफ,

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا ۙ اَىُّ الۡفَرِيۡقَيۡنِ خَيۡرٌ

तो काफिर लोग ईमान वालों से केहते हैं के दोनों फ़रीक़ में से किस का

مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ۝٧٣ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ

मकान बेहतर है और किस की मजलिस अच्छी है? और उन से पेहले कितनी क़ौमों को हम ने हलाक किया

هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ۝٧٤ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ

जो ज़्यादा अच्छे सामान वाली और ज़्यादा अच्छी रौनक़ वाली थीं। आप फ़रमा दीजिए जो गुमराही में हैं

فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ

तो उन को रहमान तआला ढील दे रहे हैं। यहां तक के जब वो देखेंगे उस अज़ाब को

اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ

जिस से उन्हें डराया जा रहा है या अज़ाब या क़यामत, तो अनक़रीब उन्हें मालूम हो जाएगा के कौन

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ۝٧٥ وَ يَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

ज़्यादा बुरी जगह वाला है और कौन कमज़ोर जमाअत वाला है। और अल्लाह हिदायत में बढ़ाते हैं उन्हें

اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ

जो हिदायतयाफ्ता हैं। और बाक़ी रेहने वाले अच्छे आमाल बेहतर हैं तेरे रब के नज़दीक

رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ۝٧٦ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ

सवाब के ऐतेबार से और ज़्यादा अच्छे हैं अन्जाम के ऐतेबार से। क्या फिर आप ने देखा वो शख्स जिस ने

بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّ وَلَدًا ۝٧٧ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ

हमारी आयतों के साथ कुफ्र किया और उस ने कहा के ज़रूर मुझे माल और औलाद मिलेगी? क्या वो ग़ैब पर

اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝٧٨ كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ

मुत्तलेअ हुवा या उस ने रहमान तआला के पास कोई अहद ले रखा है? हरगिज़ नहीं! अनक़रीब हम लिख रहे हैं उसे

مَا يَقُوْلُ وَ نَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۝٧٩ وَّ نَرِثُهٗ

जो वो केह रहा है और हम उस के लिए अज़ाब को लम्बा करेंगे। और हम उस के वारिस बनेंगे उन चीज़ों में

مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ۝٨٠ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً

जिन्हें वो केह रहा है और वो हमारे पास तन्हा आएगा। और उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर कई माबूद बना लिए हैं

لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۝٨١ كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ

ताके वो उन के लिए कूव्वत का ज़रिया बनें। हरगिज़ नहीं! अनक़रीब वो उन की इबादत का इन्कार करेंगे

٥ ع ١٧ ٨ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۝٨٢ اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا

और वो उन के मुखालिफ बन जाएंगे। क्या आप ने देखा नहीं के हम ने

الشَّيٰطِيۡنَ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ تَؤُزُّهُمۡ اَزًّا ﴿۸۳﴾ فَلَا تَعۡجَلۡ

शयातीन को काफिरों पर छोड़ रखा है, वो उन को खूब भड़का रहे हैं। इस लिए आप उन के बारे में

عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمۡ عَدًّا ﴿۸۴﴾ يَوۡمَ نَحۡشُرُ الۡمُتَّقِيۡنَ

जल्दी न करें। हम उन के लिए गिन्ती गिन रहे हैं। जिस दिन हम मुत्तक़ियों को इकट्ठा करेंगे रहमान तआला

اِلَى الرَّحۡمٰنِ وَفۡدًا ﴿۸۵﴾ وَّنَسُوۡقُ الۡمُجۡرِمِيۡنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرۡدًا ﴿۸۶﴾ وقف لازم

की तरफ़ जमाअत दर जमाअत। और हम मुजरिमों को हांकेंगे जहन्नम की तरफ प्यासा होने की हालत में।

لَا يَمۡلِكُوۡنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنۡدَ الرَّحۡمٰنِ

वो शफ़ाअत के मालिक नहीं होंगे मगर वो जिस ने रहमान तआला के पास कोई अहद ले

عَهۡدًا ﴿۸۷﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحۡمٰنُ وَلَدًا ﴿۸۸﴾ لَقَدۡ جِئۡتُمۡ وقف لازم

रखा हो। और वो केहते हैं के रहमान तआला ने औलाद बनाई है। यक़ीनन तुम ने बड़ी भारी

شَيۡـًٔا اِدًّا ﴿۸۹﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ مِنۡهُ وَ تَنۡشَقُّ

बात कही है। के क़रीब है के आसमान भी उस से फट जाएं और ज़मीन भी

الۡاَرۡضُ وَتَخِرُّ الۡجِبَالُ هَدًّا ﴿۹۰﴾ اَنۡ دَعَوۡا لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدًا ﴿۹۱﴾

फट पड़े और पहाड़ रेज़ा हो कर गिर पड़ें। इस वजह से के वो रहमान तआला के लिए औलाद का दावा करते हैं।

وَمَا يَنۡۢبَغِىۡ لِلرَّحۡمٰنِ اَنۡ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿۹۲﴾ اِنۡ كُلُّ مَنۡ

और रहमान तआला के लिए मुनासिब नहीं हैं के औलाद बनाए। यक़ीनन सारे के सारे वो जो आसमानों

فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ اِلَّاۤ اٰتِى الرَّحۡمٰنِ عَبۡدًا ﴿۹۳﴾ لَقَدۡ اَحۡصٰىهُمۡ

और ज़मीन में हैं वो रहमान तआला के पास सिर्फ बन्दे की हैसियत से हाज़िर होने वाले हैं। यक़ीनन अल्लाह ने

وَعَدَّهُمۡ عَدًّا ﴿۹۴﴾ وَكُلُّهُمۡ اٰتِيۡهِ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فَرۡدًا ﴿۹۵﴾

उन का इहाता कर रखा है और उन की गिनती गिन रहा है। और सब के सब उस के पास क़यामत के दिन तन्हा आएंगे।

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجۡعَلُ لَهُمُ الرَّحۡمٰنُ

यक़ीनन वो जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे, अनक़रीब रहमान तआला उन के लिए महबूबीयत रख

وُدًّا ﴿۹۶﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرۡنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الۡمُتَّقِيۡنَ

देगा। फिर हम ने ही इस क़ुरआन को आप की ज़बान में आसान किया है, ताके आप उस के ज़रिए मुत्तक़ियों को

وَتُنۡذِرَ بِهٖ قَوۡمًا لُّدًّا ﴿۹۷﴾ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ ؕ

बशारत दें और उस के ज़रिए आप झगड़ालू क़ौम को डराएं। और उन से पेहले कितनी उम्मतों को हम ने हलाक किया।

انتصف ع ٦ / ١٢ / ٦

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

क्या आप उन में से किसी को महसूस करते हैं या उन की कोई आहट सुनते हैं?

اٰيَاتُهَا ١٣٥ (٢٠) سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ (٤٥) رُكُوْعَاتُهَا ٨

उस में १३५ आयतें हैं सूरह ताहा मक्का में नाज़िल हुई और ८ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طٰهٰ ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً

ता हा। हम ने ये कुरआन आप पर इस लिए नहीं उतारा ताके आप मशक़्क़त उठाएं। मगर उतारा है उस शख़्स को

لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ

नसीहत देने के लिए जो डरे। ये उतारा गया है उस अल्लाह की तरफ से जिस ने ज़मीन और बुलन्द आसमानों

الْعُلٰى ﴿٤﴾ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

को पैदा किया। रहमान तआला अर्श पर जलवाअफरोज़ है। उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में

وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾

हैं और जो ज़मीन में हैं और जो उन के दरमियान में हैं और जो गीली मिट्टी के नीचे हैं। और अगर आप बात को

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

ज़ोर से कहें तो यक़ीनन चुपके से कही हुई बात को और सब से ज़्यादा छुपाई हुई बात को वो जानता है। अल्लाह के

وقف لازم

اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿٩﴾

सिवा कोई माबूद नहीं। उस के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं। क्या आप के पास मूसा (अलैहिस्सलाम) का क़िस्सा आया?

اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا

जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने आग देखी, फिर अपने घर वालों से कहा के तुम ठेहरो! यक़ीनन मैं ने आग देखी है,

لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾

शायद मैं तुम्हारे पास उस में से कोई शौला ले आऊँ या आग पर रहनुमाई पा लूँ। फिर जब

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿١١﴾ اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ

मूसा (अलैहिस्सलाम) आग के पास पहोंचे तो आवाज़ दी गई ऐ मूसा! यक़ीनन मैं तुम्हारा रब हूँ, इस लिए

نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ

अपने चप्पल उतार लीजिए। यक़ीनन आप पाक वादिए तुवा में हैं। और मैं ने आप को मुन्तख़ब किया,

فَاسۡتَمِعۡ لِمَا يُوۡحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِىۡۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا

इस लिए आप कान लगा कर सुनिए उसे जो आप की तरफ़ वह्य की जा रही है। यक़ीनन मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई

فَاعۡبُدۡنِىۡ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكۡرِىۡ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ

माबूद नहीं, इस लिए आप मेरी इबादत कीजिए और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ाइम कीजिए। यक़ीनन क़यामत आने

اَكَادُ اُخۡفِيۡهَا لِتُجۡزٰى كُلُّ نَفۡسٍۢ بِمَا تَسۡعٰى ﴿١٥﴾

वाली है, मैं उसे छुपाना चाहता हूँ ताके हर शख़्स को बदला दिया जाए उन आमाल का जो उस ने किए।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنۡهَا مَنۡ لَّا يُؤۡمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرۡدٰى ﴿١٦﴾

इस लिए आप को हरगिज़ उस से न रोके वो शख़्स जो क़यामत पर ईमान नहीं रखता और जो अपनी ख्वाहिश के पीछे

وَمَا تِلۡكَ بِيَمِيۡنِكَ يٰمُوۡسٰى ﴿١٧﴾ قَالَ هِىَ عَصَاىَ ۚ اَتَوَكَّؤُا

चल पड़ा है, फिर कहीं आप हलाक हो जाएं। और ऐ मूसा! आप के दाएं हाथ में क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ये मेरी

عَلَيۡهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِىۡ وَلِىَ فِيۡهَا مَاٰرِبُ

लाठी है। उस पर मैं टेक लगाता हूँ और उस के ज़रिए मैं पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर और मेरी उस में दूसरी भी

اُخۡرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلۡقِهَا يٰمُوۡسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلۡقٰىهَا فَاِذَا هِىَ حَيَّةٌ

हाजतें हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ मूसा! उस को डाल दीजिए। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को डाल दिया तो अचानक वो साँप

تَسۡعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذۡهَا وَلَا تَخَفۡ ٚ وقفة سَنُعِيۡدُهَا سِيۡرَتَهَا

बन गया दौड़ता हुवा। अल्लाह ने फरमाया के उस को पकड़ लीजिए और न डरिए। अनक़रीब हम उसे उस की पेहली

الۡاُوۡلٰى ﴿٢١﴾ وَاضۡمُمۡ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخۡرُجۡ بَيۡضَآءَ

हालत पर लौटा देंगे। और अपना हाथ अपनी बग़ल में दबा दीजिए, वो बग़ैर किसी बुराई के सफेद हो कर

مِنۡ غَيۡرِ سُوۡٓءٍ اٰيَةً اُخۡرٰى ۙ ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنۡ اٰيٰتِنَا الۡكُبۡرٰى ۚ ﴿٢٣﴾

निकलेगा। ये दूसरे मोअजिज़े के तौर पर (दे रहे हैं)। ताके हम आप को दिखाएं हमारी बड़ी निशानियों में से।

اِذۡهَبۡ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۚ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشۡرَحۡ ع

आप जाइए फिरऔन के पास, यक़ीनन उस ने सरकशी की है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब!

لِىۡ صَدۡرِىۡ ۙ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرۡ لِىۡۤ اَمۡرِىۡ ۙ ﴿٢٦﴾ وَاحۡلُلۡ عُقۡدَةً مِّنۡ لِّسَانِىۡ ۙ ﴿٢٧﴾

मेरे लिए मेरा सीना खोल दीजिए। और मेरे लिए मेरे मुआमले में आसानी कर दीजिए। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दीजिए।

يَفۡقَهُوۡا قَوۡلِىۡ ۖ ﴿٢٨﴾ وَاجۡعَلۡ لِّىۡ وَزِيۡرًا مِّنۡ اَهۡلِىۡ ۙ ﴿٢٩﴾

ताके वो मेरी बात को समझ सकें। और मेरे लिए मेरे घर वालों में से मददगार मुक़र्रर कर दीजिए।

هٰرُوْنَ اَخِى ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِىْ ﴿٣١﴾ وَاَشْرِكْهُ

(यानी) मेरे भाई हारून को (मददगार मुक़र्रर कर दीजिए)। उस के ज़रिए मेरी कूव्वत को और बढ़ा दीजिए। और उस को

فِىْٓ اَمْرِىْ ﴿٣٢﴾ كَىْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ

मेरे मुआमले में शरीक बना दीजिए। ताके हम आप की तस्बीह करें बहोत ज़्यादा। और बहोत ज़्यादा आप को याद करें।

كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾

यक़ीनन आप हमें देख रहे हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ मूसा! आप को आप का सवाल यक़ीनन दे दिया गया।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ

यक़ीनन हम ने आप पर एक दूसरी मरतबा भी एहसान किया है। जब हम ने आप की माँ की तरफ वही की,

مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ

जो अब वही की जा रही है। के तुम मूसा को डाल दो सन्दूक़ में, फिर उस को समन्दर में

فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ

फेंक दो, फिर समन्दर उस को किनारे पर फैंक देगा, उस को मेरा और उस का दुशमन ले

لِّىْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّىْ ۚ وَلِتُصْنَعَ

लेगा। और मैं ने आप पर अपनी तरफ से महब्बत डाल दी। और इस लिए ताके आप की परवरिश मेरी हिफाज़त

وقف لازم

عَلٰى عَيْنِىْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِىْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ

में हो। जब आप की बेहेन चल रही थी, और वो केह रही थी, क्या मैं तुम्हें पता बतलाऊँ ऐसे घर वालों का जो

يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا

उस की परवरिश करें? फिर हम ने आप को लौटाया आप की माँ की तरफ ताके उन की आँखें ठन्डी हों

وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ

और वो ग़मगीन न हों। और आप ने एक शख्स को क़त्ल किया, फिर हम ने आप को नजात दी ग़म से और हम ने

فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ

आप को कई इम्तिहानों से गुज़ारा। फिर आप मदयन वालों में कई साल रहे। फिर ऐ मूसा!

عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِىْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ

मुक़र्ररा वक़्त पर आप आ गए। और मैं ने आप को खास अपने लिए मुन्तखब किया। आप और आप का

اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَآ

भाई मेरे मोअजिज़ात को ले कर जाइए, और मेरी याद में कोताही न कीजिए। तुम दोनों जाओ

اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝٤٣ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ फ़िरऔन के पास इस लिए के उस ने सरकशी की है। फिर उस से नरम बात कहो, शायद वो
يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ۝٤٤ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ नसीहत हासिल करे या डरे। वो दोनों केहने लगे ऐ हमारे रब! यक़ीनन हम डरते है इस से के वो हम पर
عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ۝٤٥ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ ज़्यादती करे या ज़ुल्म करे। अल्लाह ने फ़रमाया के मत डरो, इस लिए के मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुन भी रहा
اَسْمَعُ وَاَرٰى ۝٤٦ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ हूँ और देख भी रहा हूँ। फिर तुम उस के पास जाओ, फिर उस से कहो के यक़ीनन हम तेरे रब के भेजे हुए पैग़म्बर हैं,
مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ इस लिए तू बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और तू उन्हें अज़ाब न दे। यक़ीनन हम तेरे पास तेरे रब की
مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ۝٤٧ اِنَّا قَدْ तरफ़ से मोअजिज़ा ले कर आए हैं। और सलामती है उस पर जो हिदायत के पीछे चले। यक़ीनन हमारी तरफ
اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَ تَوَلّٰى ۝٤٨ قَالَ वह़ी की गई है के अज़ाब (नाज़िल होगा) उस पर जो झुठलाए और ऐराज़ करे। फिरऔन ने पूछा
فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝٤٩ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ के तुम्हारा कौन रब है ऐ मूसा? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया हमारा रब वो है जिस ने हर चीज़ को उस का
خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ۝٥٠ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ۝٥١ वुजूद अता किया, फिर उस ने रहनुमाई की। फिरऔन ने कहा फिर पेहली क़ौमों का क्या हाल हुवा?
قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ۝٥٢ मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया उस का इल्म मेरे रब के पास है किताब में। मेरा रब न भटकता है और न भूलता है।
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا वो अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को गेहवारा बनाया और जिस ने ज़मीन में तुम्हारे लिए रास्ते
سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا बनाए और जिस ने आसमानों से पानी उतारा। फिर हम ने उस के ज़रिए मुख़तलिफ़
مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ۝٥٣ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ नबातात के जोड़ों को निकाला। के तुम खाओ और अपने चौपाओं को चराओ। यक़ीनन इस में

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿۵۴﴾ مِنۡهَا خَلَقۡنٰكُمۡ وَفِيۡهَا ع ١١

अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं। मिट्टी ही से हम ने तुम्हें पैदा किया है और उसी में

نُعِيۡدُكُمۡ وَمِنۡهَا نُخۡرِجُكُمۡ تَارَةً اُخۡرٰى ﴿۵۵﴾

हम तुम्हें दोबारा लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दूसरी मरतबा निकालेंगे। यक़ीनन हम ने

وَلَقَدۡ اَرَيۡنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿۵۶﴾ قَالَ

फ़िरऔन को अपने सारे मोअजिज़ात दिखलाए, फिर भी उस ने झुठलाया और इन्कार किया। फिरऔन ने कहा

اَجِئۡتَنَا لِتُخۡرِجَنَا مِنۡ اَرۡضِنَا بِسِحۡرِكَ يٰمُوۡسٰى ﴿۵۷﴾

क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो ताके हमें हमारे मुल्क से निकाल दो अपने जादू के ज़ोर से ऐ मूसा?

فَلَنَاۡتِيَنَّكَ بِسِحۡرٍ مِّثۡلِهٖ فَاجۡعَلۡ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكَ

फिर हम ज़रूर आप के पास उसी जैसा जादू लाएंगे, फिर हमारे और आप के दरमियान एक मुक़र्ररा वक़्त

مَوۡعِدًا لَّا نُخۡلِفُهٗ نَحۡنُ وَلَاۤ اَنۡتَ مَكَانًا سُوًى ﴿۵۸﴾

तै कीजिए के न हम उस से पीछे रहें और न तुम, (ये मुक़ाबला) एक हमवार मैदान में (होना चाहिए)।

قَالَ مَوۡعِدُكُمۡ يَوۡمُ الزِّيۡنَةِ وَاَنۡ يُّحۡشَرَ النَّاسُ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम्हारा मुक़र्ररा वक़्त ईद का दिन है और ये के चाश्त के वक़्त तमाम लोग जमा

ضُحًى ﴿۵۹﴾ فَتَوَلّٰى فِرۡعَوۡنُ فَجَمَعَ كَيۡدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿۶۰﴾

हो जाएं। फिर फिरऔन वापस लौटा, फिर उस ने अपने मक्र व फरेब को जमा किया, फिर वो आया।

قَالَ لَهُمۡ مُّوۡسٰى وَيۡلَكُمۡ لَا تَفۡتَرُوۡا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन से कहा के तुम्हारा नास हो! अल्लाह पर झूठ मत घड़ो वरना वो तुम्हें

فَيُسۡحِتَكُمۡ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدۡ خَابَ مَنِ افۡتَرٰى ﴿۶۱﴾

अज़ाब के ज़रिए हलाक कर देगा। और यक़ीनन नाकाम होता है वो शख़्स जो झूठ घड़ता है।

فَتَنَازَعُوۡۤا اَمۡرَهُمۡ بَيۡنَهُمۡ وَاَسَرُّوا النَّجۡوٰى ﴿۶۲﴾

फिर उन्हों ने अपने मुआमले में आपस में इख़्तिलाफ किया और चुपके से सरगोशी की।

قَالُوۡۤا اِنۡ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيۡدٰنِ اَنۡ يُّخۡرِجٰكُمۡ

उन्हों ने कहा के बेशक ये दोनों जादूगर हैं, ये चाहते हैं के तुम्हें अपने मुल्क से

مِّنۡ اَرۡضِكُمۡ بِسِحۡرِهِمَا وَيَذۡهَبَا بِطَرِيۡقَتِكُمُ

अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारे अच्छे तरीक़े को खत्म

الۡمُثۡلٰى ﴿۶۳﴾ فَاَجۡمِعُوۡا كَيۡدَكُمۡ ثُمَّ ائۡتُوۡا صَفًّا ۚ وَقَدۡ

कर दें। इस लिए अपनी तदबीर इकट्ठी करो, फिर तुम सफ़ बना कर आओ। और यक़ीनन

اَفۡلَحَ الۡيَوۡمَ مَنِ اسۡتَعۡلٰى ﴿۶۴﴾ قَالُوۡا يٰمُوۡسٰۤى اِمَّاۤ

कामयाब होगा वही शख़्स जो आज ग़ालिब रहेगा। उन्हों ने कहा ऐ मूसा! या

اَنۡ تُلۡقِىَ وَاِمَّاۤ اَنۡ نَّكُوۡنَ اَوَّلَ مَنۡ اَلۡقٰى ﴿۶۵﴾ قَالَ

तुम डालो या हम पेहले डालें। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया बल्के तुम

بَلۡ اَلۡقُوۡا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمۡ وَ عِصِيُّهُمۡ يُخَيَّلُ اِلَيۡهِ

डालो! फिर अचानक उन की रस्सियाँ और उन की लाठियाँ उन के सामने उन के जादू के ज़ोर से मुतख़य्यल

مِنۡ سِحۡرِهِمۡ اَنَّهَا تَسۡعٰى ﴿۶۶﴾ فَاَوۡجَسَ فِىۡ نَفۡسِهٖ

होने लगीं के वो दौड़ रही हैं। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने जी में

خِيۡفَةً مُّوۡسٰى ﴿۶۷﴾ قُلۡنَا لَا تَخَفۡ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡاَعۡلٰى ﴿۶۸﴾

ख़ौफ़ महसूस किया। हम ने कहा आप न डरिए, यक़ीनन तुम ही बुलन्द रहोगे।

وَاَلۡقِ مَا فِىۡ يَمِيۡنِكَ تَلۡقَفۡ مَا صَنَعُوۡا ؕ اِنَّمَا

और आप डाल दें उसे जो आप के दाएं हाथ में है, वो निगल लेगा उन चीज़ों को जो वो बना कर लाए हैं। वो

صَنَعُوۡا كَيۡدُ سٰحِرٍ ؕ وَلَا يُفۡلِحُ السّٰحِرُ حَيۡثُ اَتٰى ﴿۶۹﴾

जो बना कर लाए हैं वो सिर्फ जादूगर का मक्र है। और जादूगर कामयाब नहीं होता जहाँ वो जाए।

فَاُلۡقِىَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوۡنَ

फिर जादूगर सजदे में गिर गए, वो केहने लगे के हम मूसा और हारून के रब पर ईमान

وَمُوۡسٰى ﴿۷۰﴾ قَالَ اٰمَنۡتُمۡ لَهٗ قَبۡلَ اَنۡ اٰذَنَ لَكُمۡ ؕ اِنَّهٗ

ले आए। फ़िरऔन ने कहा क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से पेहले के मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? यक़ीनन ये

لَكَبِيۡرُكُمُ الَّذِىۡ عَلَّمَكُمُ السِّحۡرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيۡدِيَكُمۡ

मूसा तुम में से बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखलाया है। तो मैं तुम्हारे हाथ और

وَاَرۡجُلَكُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمۡ فِىۡ جُذُوۡعِ

पैर जानिबे मुख़ालिफ से काट दूँगा, फिर मैं तुम्हें खजूर के तनों में सूली पर चढ़ाऊँगा। और तुम्हें

النَّخۡلِ ۫ وَلَتَعۡلَمُنَّ اَيُّنَاۤ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبۡقٰى ﴿۷۱﴾ قَالُوۡا

मालूम हो जाएगा के कौन ज़्यादा सख़्त अज़ाब वाला है और कौन ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है। उन्हों ने

لَنۡ نُّؤۡثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الۡبَيِّنٰتِ وَ الَّذِىۡ

कहा के हम तुझे हरगिज़ तरजीह़ नहीं देंगे उन रोशन मोअजिज़ात पर जो हमारे पास आए और उस अल्लाह पर

فَطَرَنَا فَاقۡضِ مَاۤ اَنۡتَ قَاضٍ‌ؕ اِنَّمَا تَقۡضِىۡ هٰذِهِ

जिस ने हमें पैदा किया, इस लिए तू कर ले जो तुझे करना हो। तू तो सिर्फ इस दुन्यवी ज़िन्दगी को

الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَاؕ ۝٧٢ اِنَّاۤ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغۡفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا

ख़त्म कर सकता है। हम तो ईमान ले आए हैं हमारे रब पर ताके वो हमारी ख़ताएं मुआफ कर दे

وَمَاۤ اَكۡرَهۡتَنَا عَلَيۡهِ مِنَ السِّحۡرِؕ وَاللّٰهُ خَيۡرٌ

और उस को मुआफ़ कर दे जिस जादू पर तू ने हमें मजबूर किया। और अल्लाह बेहतर है

الثلثة وَّاَبۡقٰى ۝٧٣ اِنَّهٗ مَنۡ يَّاۡتِ رَبَّهٗ مُجۡرِمًا فَاِنَّ لَهٗ

और बाक़ी रेहने वाला है। यक़ीनन जो भी अपने रब के पास मुजरिम बन कर आएगा तो यक़ीनन उस के लिए

جَهَنَّمَؕ لَا يَمُوۡتُ فِيۡهَا وَلَا يَحۡيٰى ۝٧٤ وَمَنۡ يَّاۡتِهٖ

जहन्नम है, जिस में न वो मरेगा और न जिएगा। और जो उस के पास मोमिन बन कर

مُؤۡمِنًا قَدۡ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓـئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ

आएगा, जिस ने आमाले सालिहा भी किए होंगे तो उन के लिए बुलन्द दरजात

الۡعُلٰى ۝٧٥ جَنّٰتُ عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ

होंगे। जन्नाते अद्न होंगी, जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी,

ركوع خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا‌ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنۡ تَزَكّٰى ۝٧٦

जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये उस शख्स का बदला है जो पाक साफ रहा।

وَلَقَدۡ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰى مُوۡسٰٓى ۙ اَنۡ اَسۡرِ بِعِبَادِىۡ

यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की के मेरे बन्दों को ले कर रात के वक़्त निकल जाइए,

فَاضۡرِبۡ لَهُمۡ طَرِيۡقًا فِى الۡبَحۡرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ

फिर उन के लिए समन्दर में खुश्क रास्ता बनाने के लिए (असा) मारिए, पकड़े जाने

دَرَكًا وَّلَا تَخۡشٰى ۝٧٧ فَاَتۡبَعَهُمۡ فِرۡعَوۡنُ بِجُنُوۡدِهٖ

का न आप को खौफ़ होगा, न डर। फिर फ़िरऔन अपना लशकर ले कर उन के पीछे चला,

فَغَشِيَهُمۡ مِّنَ الۡيَمِّ مَا غَشِيَهُمۡؕ ۝٧٨ وَاَضَلَّ فِرۡعَوۡنُ

फिर उन को डुबो दिया समन्दर ने जैसा के डुबोया। और फिरऔन ने अपनी क़ौम को

قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ

गुमराह किया और उस ने रास्ता नहीं दिखाया। ऐ बनी इस्राईल! यक़ीनन हम ने तुम्हें नजात दी

مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ

तुम्हारे दुशमन से और हम ने तुम से वादा किया कोहे तूर की दाईं जानिब का,

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا

और हम ने तुम पर मन्न व सल्वा उतारा। खाओ उन पाकीज़ा

مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ

चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दी हैं और उन में सरकशी मत करो, वरना तुम

عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ

पर मेरा ग़ज़ब उतरेगा। और जिस पर मेरा गुस्सा उतरेगा तो यक़ीनन वो (जहन्नम में)

هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ

गिर गया। और यक़ीनन मैं बख्शने वाला हूँ उस शख्स को जिस ने तौबा की, और जो ईमान लाया और जिस ने

صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ

आमाले सालिहा किए, फिर उस ने हिदायत पाई। और आप को अपनी क़ौम से क्या चीज़ जल्दी लाई,

يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ

ऐ मूसा? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ये लोग मेरे पीछे हैं और मैं आप के पास जल्दी

اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ

आया, ऐ मेरे रब! ताके आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह ने फरमाया के यक़ीनन हम ने आप की क़ौम को आप के

مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ

बाद बला में मुब्तला किया है और उन को सामिरी ने गुमराह कर दिया है। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी

مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ

क़ौम की तरफ वापस लौटे गुस्सा होते हुए, अफ़सोस करते हुए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ

اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۬ؕ اَفَطَالَ

मेरी क़ौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या फिर

عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ

तुम पर लम्बा ज़माना गुज़र गया या तुम ने इरादा किया के तुम पर अपने रब की

غَضَبٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ فَاَخۡلَفۡتُمۡ مَّوۡعِدِىۡ ﴿۸۶﴾ قَالُوۡا

तरफ से ग़ज़ब उतरे, फिर तुम ने मेरे वादे के ख़िलाफ़ किया? वो बोले

مَاۤ اَخۡلَفۡنَا مَوۡعِدَكَ بِمَلۡكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلۡنَاۤ اَوۡزَارًا

हम ने अपने इखतियार से आप के वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया, लेकिन हम पर बोझ डाल दिया गया था

مِّنۡ زِيۡنَةِ الۡقَوۡمِ فَقَذَفۡنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلۡقَى

क़ौम के ज़ेवरात का, फिर हम ने वो ज़ेवरात डाल दिए, और इसी तरह सामिरी ने भी

السَّامِرِىُّ ﴿۸۷﴾ فَاَخۡرَجَ لَهُمۡ عِجۡلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ

डाले। फिर सामिरी ने उन के लिए एक गाए के बछड़े का जिस्म बना कर निकाला जिस के लिए गाए की आवाज़ थी,

فَقَالُوۡا هٰذَاۤ اِلٰهُكُمۡ وَاِلٰهُ مُوۡسٰى ۙ فَنَسِىَ ﴿۸۸﴾

तो वो बोले के ये तुम्हारा माबूद है और मूसा का माबूद है, फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) भूल गए हैं।

اَفَلَا يَرَوۡنَ اَلَّا يَرۡجِعُ اِلَيۡهِمۡ قَوۡلًا ۙ وَّلَا يَمۡلِكُ

क्या फिर वो समझते नहीं के वो उन की बात का जवाब भी नहीं दे सकता और न उन के

لَهُمۡ ضَرًّا وَّلَا نَفۡعًا ﴿۸۹﴾ وَلَقَدۡ قَالَ لَهُمۡ هٰرُوۡنُ ع ۴ ۱۳

लिए नफ़ा और ज़रर का मालिक है? और उन से हारून (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया उस से पेहले ऐ

مِنۡ قَبۡلُ يٰقَوۡمِ اِنَّمَا فُتِنۡتُمۡ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحۡمٰنُ

मेरी क़ौम! तुम तो सिर्फ़ इस के ज़रिए बला में डाले गए हो। यक़ीनन तुम्हारा रब रहमान तआला है, तो तुम

فَاتَّبِعُوۡنِىۡ وَاَطِيۡعُوۡۤا اَمۡرِىۡ ﴿۹۰﴾ قَالُوۡا لَنۡ نَّبۡرَحَ عَلَيۡهِ

मेरे पीछे चलो और मेरे हुक्म की इताअत करो। उन्हों ने कहा के हम हरगिज़ हटेंगे नहीं, इसी पर जमे

عٰكِفِيۡنَ حَتّٰى يَرۡجِعَ اِلَيۡنَا مُوۡسٰى ﴿۹۱﴾ قَالَ يٰهٰرُوۡنُ

रहेंगे, यहां तक के हमारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम) वापस आएं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ हारून! तुझे

مَا مَنَعَكَ اِذۡ رَاَيۡتَهُمۡ ضَلُّوۡۤا ﴿۹۲﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَيۡتَ

क्या मानेअ था जब तू ने उन को देखा के वो गुमराह हो गए हैं, इस से के तू मेरे पीछे आ जाता, क्या तू ने मेरे

اَمۡرِىۡ ﴿۹۳﴾ قَالَ يَبۡنَؤُمَّ لَا تَاۡخُذۡ بِلِحۡيَتِىۡ وَلَا بِرَاۡسِىۡ ۚ

हुक्म के ख़िलाफ किया? हारून (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ऐ मेरी माँ के बेटे! मेरी दाढ़ी और मेरे सर के बालों को

اِنِّىۡ خَشِيۡتُ اَنۡ تَقُوۡلَ فَرَّقۡتَ بَيۡنَ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

मत पकड़िए। यक़ीनन मैं डरा इस से के आप ये कहो के तू ने बनी इस्राईल के दरमियान जुदाई डाली

وَلَمۡ تَرۡقُبۡ قَوۡلِیۡ ﴿۹۴﴾ قَالَ فَمَا خَطۡبُكَ یٰسَامِرِیُّ ﴿۹۵﴾

और तू ने मेरी बात का लिहाज़ नहीं किया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पूछा फिर तेरा क्या हाल है, ऐ सामिरी?

قَالَ بَصُرۡتُ بِمَا لَمۡ یَبۡصُرُوۡا بِهٖ فَقَبَضۡتُ قَبۡضَةً

सामिरी ने कहा के मैं ने देखा वो जिस को उन्हों ने नहीं देखा, तो मैं ने एक मुट्ठी भर ली थी अल्लाह के भेजे हुए

مِّنۡ اَثَرِ الرَّسُوۡلِ فَنَبَذۡتُهَا وَ كَذٰلِكَ سَوَّلَتۡ لِیۡ

फ़रिशते के निशाने क़दम की, फिर मैं ने उस को डाल दिया और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे ये बात

نَفۡسِیۡ ﴿۹۶﴾ قَالَ فَاذۡهَبۡ فَاِنَّ لَكَ فِی الۡحَیٰوةِ

समझाई। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के फिर तू जा! यक़ीनन तेरे लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में ये सज़ा है के

اَنۡ تَقُوۡلَ لَا مِسَاسَ ۪ وَ اِنَّ لَكَ مَوۡعِدًا لَّنۡ تُخۡلَفَهٗ ۚ

तू केहता फिरे के ‘‘لَا مِسَاسَ’’ (मुझे मत छूना!) और यक़ीनन तेरे लिए वादे का वक़्त मुक़र्रर है, जिस के तू

وَانۡظُرۡ اِلٰۤى اِلٰهِكَ الَّذِیۡ ظَلۡتَ عَلَیۡهِ عَاكِفًا ؕ

आगे पीछे नहीं हो सकेगा। और देख अपने उस माबूद की तरफ जिस पर तू जमा बैठा था।

لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنۡسِفَنَّهٗ فِی الۡیَمِّ نَسۡفًا ﴿۹۷﴾ اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ

के हम उसे जला देते हैं, फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर के समन्दर में फैंक देते हैं। तुम्हारा माबूद तो वही

اللّٰهُ الَّذِیۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَیۡءٍ عِلۡمًا ﴿۹۸﴾

अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। जो हर चीज़ पर इल्म के ऐतेबार से वसीअ है।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَیۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ مَا قَدۡ سَبَقَ ۚ وَقَدۡ

इसी तरह हम आप के सामने बयान करते हैं उन चीज़ों की ख़बरों में से जो गुज़र चुकी हैं। और यक़ीनन

اٰتَیۡنٰكَ مِنۡ لَّدُنَّا ذِكۡرًا ۖۚ ﴿۹۹﴾ مَنۡ اَعۡرَضَ عَنۡهُ فَاِنَّهٗ

हम ने आप को अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है। जो भी उस से ऐराज़ करेगा तो यक़ीनन

یَحۡمِلُ یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ وِزۡرًا ۙ ﴿۱۰۰﴾ خٰلِدِیۡنَ فِیۡهِ ؕ وَسَآءَ لَهُمۡ

वो क़यामत के दिन बोझ उठाएगा। जिस में वो हमेशा रहेंगे। और उन के लिए क़यामत के दिन

یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ حِمۡلًا ۙ ﴿۱۰۱﴾ یَّوۡمَ یُنۡفَخُ فِی الصُّوۡرِ وَنَحۡشُرُ

वो बहोत बुरा बोझ होगा। जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और हम मुजरिमों को

الۡمُجۡرِمِیۡنَ یَوۡمَئِذٍ زُرۡقًا ۖۚ ﴿۱۰۲﴾ یَّتَخَافَتُوۡنَ بَیۡنَهُمۡ اِنۡ

उस दिन नीली आँखों वाले होने की हालत में इकट्ठा करेंगे। वो आपस में सरगोशी करेंगे के तुम

لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا۝١٠٣ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ
नहीं ठेहरे मगर दस (दिन)। हम खूब जानते हैं उसे जो वो केह रहे हैं
اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا۝١٠٤
जब के उन में से ज़्यादा बेहतर राए वाला कहेगा के तुम नहीं ठेहरे मगर एक दिन।
وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا۝١٠٥
और ये आप से पूछते हैं पहाड़ों के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के मेरा रब उन को रेज़ा रेज़ा कर देगा।
فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا۝١٠٦ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا
फिर उन को चटयल मैदान कर छोड़ेगा। जिस में तुम न कजी देखोगे और
وَّلَآ اَمْتًا۝١٠٧ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ
न कोई टीला। उस दिन वो एक पुकारने वाले के पीछे चलते होंगे जिस के सामने कोई कजी नहीं होगी।
وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا۝١٠٨
और आवाज़ें रहमान तआला के सामने पस्त होंगी, फिर तुम नहीं सुन सकोगे सिवाए हल्की आवाज़ के।
يَوْمَىِٕذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ
उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा नहीं देगी मगर उस को जिस को रहमान तआला इजाज़त दे
وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا۝١٠٩ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
और जिस का बोलना पसन्द करे। वो जानता है उन चीज़ों को जो उन के आगे हैं और जो उन के
وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا۝١١٠ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ
पीछे हैं और वो उस का इल्म के ऐतेबार से इहाता नहीं कर सकते। और तमाम चेहरे ज़िन्दा रेहने वाले,
لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ؕ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا۝١١١
थामने वाले के सामने आजिज़ होंगे। और यक़ीनन नाकाम हुवा वो जो ज़ुल्म उठा कर लाया।
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ
और जो आमाले सालिहा करेगा बशर्तेके वो मोमिन हो तो उसे न ज़ुल्म का
ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا۝١١٢ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا
अन्देशा होगा, न हक़तलफी का। और इसी तरह हम ने इसे अरबी वाला क़ुरआन बना कर उतारा है
وَّ صَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ
और उस में हम ने वईद बार बार बयान की है ताके वो मुत्तक़ी बनें

ركوع ٥

اَوۡ يُحۡدِثُ لَهُمۡ ذِكۡرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الۡمَلِكُ الۡحَقُّ ۚ

या ये कुरआन उन में सोच पैदा करे। फिर अल्लाह बरतर है, जो बरहक़ बादशाह है।

وَلَا تَعۡجَلۡ بِالۡقُرۡاٰنِ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يُّقۡضٰٓى اِلَيۡكَ

और आप कुरआन में जल्दी न कीजिए आप की तरफ़ उस की वही ख़त्म होने से पेहले।

وَحۡيُهٗ ۡ وَقُلۡ رَّبِّ زِدۡنِىۡ عِلۡمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدۡ عَهِدۡنَآ

और यूं कहिए "رَّبِّ زِدۡنِىۡ عِلۡمًا" (ऐ मेरे रब! मुझे ज़्यादा इल्म दे!) और यक़ीनन हम ने इस से पेहले

اِلٰٓى اٰدَمَ مِنۡ قَبۡلُ فَنَسِىَ وَلَمۡ نَجِدۡ لَهٗ عَزۡمًا ﴿١١٥﴾ ع ١٥ ٦

आदम (अलैहिस्सलाम) से अहद लिया था, फिर वो भूल गए और हम ने उन में अज़्म नहीं पाया।

وَاِذۡ قُلۡنَا لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اسۡجُدُوۡا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوۡٓا

और जब हम ने फ़रिशतों से कहा के तुम आदम को सज्दा करो तो उन तमाम ने सज्दा किया मगर

اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلۡنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ

इबलीस ने। उस ने इन्कार किया। फिर हम ने कहा के ऐ आदम! यक़ीनन ये तुम्हारा और तुम्हारी

وَلِزَوۡجِكَ فَلَا يُخۡرِجَنَّكُمَا مِنَ الۡجَنَّةِ فَتَشۡقٰى ﴿١١٧﴾

बीवी का दुशमन है, तो वो कहीं तुम दोनों को जन्नत से न निकाल दे, वरना तुम मशक़्क़त उठाओगे।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوۡعَ فِيۡهَا وَلَا تَعۡرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ

यक़ीनन तुम्हारे लिए ये (नेअमत) है के जन्नत में न तुम्हें भूक लगती है और न तुम नंगे होते हो। और ये के

لَا تَظۡمَؤُا فِيۡهَا وَلَا تَضۡحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسۡوَسَ اِلَيۡهِ

न तुम्हें जन्नत में प्यास लगती है और न धूप लगती है। फिर उन की तरफ़ शैतान ने

الشَّيۡطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلۡ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ

वसवसा डाला, इबलीस ने कहा के ऐ आदम! क्या मैं तुम्हें हमेशा रेहने का दरख़्त बतलाऊँ और

الۡخُلۡدِ وَمُلۡكٍ لَّا يَبۡلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنۡهَا فَبَدَتۡ

ऐसी सल्तनत जिसे कभी ज़वाल न आए? फिर उन दोनों ने उस दरख्त से खा लिया, फिर उन के

لَهُمَا سَوۡاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخۡصِفٰنِ عَلَيۡهِمَا

सामने उन के पोशीदा सतर खुल गए और वो दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते

مِنۡ وَّرَقِ الۡجَنَّةِ ۡ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ

चिपकाने लगे। और आदम (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब के हुक्म के खिलाफ़ किया, और ग़लती कर ली। फिर

اجۡتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيۡهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهۡبِطَا

उन के रब ने उन्हें मुन्तख़ब किया, फिर उन की तौबा क़बूल की और हिदायत दी। अल्लाह ने फ़रमाया के तुम सब के

مِنۡهَا جَمِيۡعًا ۚ بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاۡتِيَنَّكُمۡ

सब यहां से नीचे उतर जाओ, तुम में से एक दूसरे के दुशमन बन कर रहोगे। फिर अगर तुम्हारे पास

مِّنِّىۡ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ

मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत के पीछे चलेगा तो वो न गुमराह होगा

وَلَا يَشۡقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنۡ اَعۡرَضَ عَنۡ ذِكۡرِىۡ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيۡشَةً

और न बदबख़्त। और जो मेरी नसीहत (क़ुरआन) से ऐराज़ करेगा तो यक़ीनन उस के लिए तंग

ضَنۡكًا وَّنَحۡشُرُهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ اَعۡمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ

ज़िन्दगी होगी और हम उसे क़यामत के दिन अन्धा उठाएंगे। वो कहेगा के ऐ मेरे रब!

لِمَ حَشَرۡتَنِىۡۤ اَعۡمٰى وَقَدۡ كُنۡتُ بَصِيۡرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذٰلِكَ

तू ने मुझे अन्धा क्यूं उठाया हालांके मैं बसारत वाला था। अल्लाह फ़रमाएंगे के इसी तरह तेरे पास हमारी

اَتَتۡكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيۡتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الۡيَوۡمَ تُنۡسٰى ﴿١٢٦﴾

आयतें आई थीं, तो तू ने उन को भुला दिया था। और इसी तरह आज तुझे भुला दिया जाएगा।

وَكَذٰلِكَ نَجۡزِىۡ مَنۡ اَسۡرَفَ وَلَمۡ يُؤۡمِنۡ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ

और इसी तरह हम सज़ा देंगे उस शख़्स को जिस ने ज़्यादती की और जो अपने रब की आयतों पर ईमान नहीं लाया।

وَلَعَذَابُ الۡاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبۡقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمۡ يَهۡدِ لَهُمۡ

और अल्बत्ता आख़िरत का अज़ाब वो ज़्यादा सख़्त है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है। क्या फिर उन के लिए हिदायत

كَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنَ الۡقُرُوۡنِ يَمۡشُوۡنَ

का बाइस नहीं हुई ये बात के हम ने उन से पेहले कितनी क़ौमों को हलाक किया जिन के घरों में

فِىۡ مَسٰكِنِهِمۡ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ ع ١٦

ये चलते हैं? यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिए। और अगर एक

وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا

बात जो तेरे रब की तरफ़ से पेहले से हो चुकी है, वो और मुक़र्रर किया हुवा वक़्त न होता तो अज़ाब

وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾ فَاصۡبِرۡ عَلٰى مَا يَقُوۡلُوۡنَ وَسَبِّحۡ

लाज़िम हो जाता। इस लिए आप सब्र कीजिए उन बातों पर जो वो केहते हैं और अपने रब की हम्द के साथ

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ
तस्बीह कीजिए सूरज के तुलूअ होने से पेहले और सूरज के ग़ुरूब होने से पेहले।

وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
और रात के औक़ात में भी आप तस्बीह कीजिए और दिन के किनारों में भी ताके आप

تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ
राज़ी हो जाएं। अपनी निगाह भी आप न उठाएं उन चीज़ों की तरफ जिन के ज़रिए उन की जमाअतों

اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ
को हम ने मुतमत्तेअ कर रखा है दुन्यवी ज़िन्दगी की रौनक़ से, ताके हम उन्हें आज़माएं

فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ
उस में। और तेरे रब की रोज़ी बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाली है। और अपने घर वालों को हुक्म

بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ
दीजिए नमाज़ का और उस पर आप भी पाबन्दी कीजिए। हम आप से रोज़ी नहीं मांगते। हम

نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوْا
आप को रोज़ी देते हैं। और अच्छा अन्जाम तक़्वा का है। और उन्हों ने कहा के

لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ
उस के रब की तरफ से हमारे पास कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं आता? क्या उन के पास नहीं आए उन में

مَا فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ
से रोशन मोअजिज़ात जो पेहले सहीफ़ों में हैं? और अगर हम उन्हें इस से पेहले अज़ाब से

مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا
हलाक कर दें तो वो केहते के ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ कोई रसूल क्यूं नहीं भेजा

فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾
के हम तेरी आयतों का इत्तिबा करते इस से पेहले के हम ज़लील और रूस्वा हों।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ
आप फ़रमा दीजिए के सब मुन्तज़िर हैं, तो तुम भी मुन्तज़िर रहो। फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा

اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع ١٧
के कौन सीधी राह वाले हैं और कौन हिदायतयाफता हैं।